CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

आलेख

Received on 25.08.2022
Reviewed on 26.08 2022
Accepted on 28.08.2022

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर मूल्यपरक शिक्षा के क्रियान्वयन की आवश्यकता

* *डा0 (श्रीमती) विनीता चौधरी*

मुख्य शब्द: *मूल्य, शिक्षा, पाठ्यक्रम, ह्रास आदि.*

संक्षेप

वैश्वीकरण के इस दौर ने आज मानव को विकास करने के साथ–साथ उसे विनाश की ओर भी अग्रसर किया है इसका एक प्रमुख कारण मूल्यों का ह्रास है।शिक्षा में मूल्यपरकता हेतु अनेक ग्रन्थों, शास्त्रों व उपनिषदों की रचना की गई जिन्होंने न केवल मूल्यपरक शिक्षा का विकास किया अपितु उन्हें सरल भाषा में अनुवादित कर जन–जन तक पहुँचाने का कार्य भी किया है परन्तु, यदि हम हमारी वर्तमान शिक्षा पर एक दृष्टि डालें तो देखते हैं कि आज हमारी सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का अर्थ केवल अंक अर्जन करना है न कि ज्ञानार्जन। वर्तमान समाज में मूल्यों का ह्रस हमारी शिक्षा के लिये एक गंभीर चुनौती है, अतः शिक्षा संस्थाओं के पाठ्यक्रम में भी मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा का होना समाज की प्रबल आवश्यकता है

प्रस्तावना

वैश्वीकरण के इस दौर ने आज मानव को विकास करने के साथ–साथ उसे विनाश की ओर भी अग्रसर किया है। इस भौतिवादी युग में इसका एक प्रमुख कारण मूल्यों का ह्रास है। मूल्यों का सम्बन्ध जीवन व समाज के साथ–साथ शिक्षा से भी है। सुशिक्षा के द्वारा ही विचारों को पवित्र किया जा सकता है और ये सुविचार ही मानव के लिये कल्याणकारी होते हैं।

शिक्षा में मूल्यपरकता हेतु अनेक ग्रन्थों, उपनिषदों व काव्यों की रचना की गई है तथा विभिन्न विषयों – भाषा, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि के द्वारा छात्रों में मूल्यपरक शिक्षा का प्रवाह किया जा सकता है। इसके लिये अनेक सरकारी व गैर सरकारी संगठन प्रयासरत हैं। परन्तु सबसे अधिक आवश्यकता आज शिक्षक वर्ग की है। शिक्षक वर्ग के प्रयासों के द्वारा ही छात्रों में मूल्यों की वृद्धि की जा सकती है। ये प्रयास विद्यालय व समाज दोनों स्तरों पर होने आवश्यक हैं, तभी समाज में बढ़ती अनैतिकता को समाप्त किया जा सकता है।

मूल्य – अर्थ एवं अवधारणा

वैश्वीकरण के युग में तीव्र गति से होने वाले औद्योगिक विकास, नगरीकरण, जनसंख्या वृद्धि के कारण आज का मानव एक ओर तो विकास कर रहा है वहीं दूसरी ओर वह विनाश की ओर भी अग्रसर हो रहा है क्योंकि प्रगति की इस अंधी दौड़ में भौतिकतावाद के पीछे भागते हुए वह अपने मूल्यों को पीछे छोड़ता जा रहा है।

मूल्य नीतिशास्त्र का एक प्रत्यय है, इसका सम्बन्ध किसी वस्तु या विचार का हमारे लिये उपयोगिता से है। यह उपयोगिता विचारों की ग्राहयता है न कि भौतिक उपयोगिता है। हार्टमैन ने मूल्यों को प्रतिपादित करते हुए कहा है कि–''मूल्य न तो किसी वस्तु से प्रतिपादित ही माने जा सकते हैं और न ही वे सामान्य अर्थों में बोधात्मक होते हैं, इन्हें प्रत्यक्ष रूप से विचारों के माध्यम से भी आत्मसात नहीं किया जा सकता है,'' आचरण की पवित्रता, आत्मा की शुद्धता, स्वार्थों का परित्याग, मानव कल्याण, सामाजिक कल्याण, सत्यता, अहिंसा, अस्तेय, भक्ति, सर्वधर्मसमभाव, सहिष्णुता आदि को मूल्यों की श्रेणी में रखा जाता है। मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत वे मानक होते हैं जो समाज का अंग होने के नाते इकाइयों, व्यक्तियों एवं परिस्थितियों का मूल्यांकन करते हैं।

''ऑगबर्न के अनुसार .....मूल्य वह है जो मानच इच्छाओं की तुष्टि करे।''

''ए. के. सी. ओटावे के अनुसार मूल्य वे विचार हैं जिनके लिए मनुष्य जीते हैं''

मूल्य मुख्यतः निम्नलिखित तीन आयामों पर आधारित होते हैं:

1. व्यक्ति का आत्म
2. आत्म एवं अन्य व्यक्ति जिनके साथ वे प्रतिदिन अन्तः क्रिया करते हैं।
3. सामाजिक मानक।

मूल्य मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं –

1. यांत्रिक मूल्य जैसे– ऐश्वर्य, समृद्धि आदि। → विरोधाभासी
2. आत्मिक मूल्य जैसे–स्वास्थ्य, सम्मान, पवित्रता आदि → मूल्य उत्पत्ति।

मूल्यों व शिक्षा का सम्बन्ध –

भगवान बुद्ध ने कहा था – ***''परीक्ष्य भिक्षवे ग्राहय मद्वचं न तु गौरवात्''***

अर्थात् भिक्षुओं को कर्मों का सेवन परीक्षा करके करना चाहिये, न कि इसलिए कि वे मेरे द्वारा निर्दिष्ट कर्म है। कर्मों की कसौटी है अपना विवेक, विवेक की जागृति होती है सत्संगति व सद्विचारों द्वारा तथा इनके आविर्भाव हेतु सुशिक्षा एक सशक्त माध्यम है।

उपनिषद में भी कहा गया है.**''यानि अनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि''** अर्थात् छात्रों को अनिन्दनीय कर्मों का ही सेवन करना चाहिए, अन्य निन्दनीय कर्मों का नहीं।

मूल्यों व शिक्षा का सम्बन्ध वैदिक काल से ही है। मूल्यपरक शिक्षा हेतु अनेक ग्रन्थों, शास्त्रों व उपनिषदों की रचना की गई। जिन्होंने ने केवल मूल्यपरक शिक्षा का विकास किया अपितु उन्हें सरल भाषा में अनुवादित कर जन–जन तक पहुँचाने का कार्य भी किया। मनुस्मृति के अनुसार– केवल गायत्री मन्त्र का ज्ञान रखने वाला चरित्रवान ब्राहमण वेदों के ज्ञाता, परन्तु चरित्रहीन विद्वान से कहीं अधिक श्रेष्ठ है'', मूल्यपरक शिक्षा ऐसी शिक्षा है, जो उचित मूल्यों से अनुप्रेरित होती है तथा ऐसे दृष्टिकोण, आस्था व संकल को विकसित करती है, जिसमें मानव मात्र अपने जीवन के सभी कार्यों व व्यवहारों को उचित मूल्यों की कसौटी पर परखता हुआ मानव कल्याण व अपनी आत्मा की आवाज को सर्वोपरि मानता रहे, ना तो यह पूर्णतः धार्मिक शिक्षा है न ही नैतिक शिक्षा, वास्तव में यह एक धर्मनिरपेक्ष शिक्षा है। जिसमें परम्परा, संस्कृति, विश्व बन्धुत्व, आध्यात्मिक उत्थान तथा सद्भावना का संतुलित समन्वय होता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राधाकृष्णन आयोग तथा शिक्षा आयोग तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने गिरते मूल्यों पर चिंता प्रकट करते हुए मूल्यपरक शिक्षा पर बल दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया कि–**''हमारे बहुवर्गीय समाज में शिक्षा को सर्वव्यापी और शाश्वत मूल्यों को प्रोत्साहित करना चाहिये ताकि भारतीय जन में राष्ट्रीय एकता बढ़े''**। संसद की स्टेंडिग कमेटी ने 1999 में

लोक सभा व राज्य सभा के पटल पर 'मूल्य आधारित शिक्षा' पर अपनी रिपोर्ट रखी, जिसमें कहा गया कि– ''शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर मूल्य आधारित शिक्षा का समावेश हो, साथ ही पाँच आधारभूत व सार्वभौमिक मूल्य जैसे उचित व्यवहार, शांति, प्रेम, अहिंसा की स्थापना पर जोर दिया जाये'' कमेटी ने पाँच आधारभूत मूल्यों– भौतिक, बौद्धिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक सभी को सभी स्तरों पर प्रदान करने पर बल दिया। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2000) में विद्यालयी पाठ्यक्रमोंमें मूल्य शिक्षा को समन्वित करने पर जोर दिया गया। एकता एवं बन्धुत्व को बढ़ाने हेतु विद्यालयों द्वारासार्वभौमिक मूल्यों की शिक्षा देने पर ज़ोर देते हुए स्पष्ट किया गया कि संपूर्ण शिक्षाव्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि देश के बालक एवं बालिकाएँ अच्छा देखें, अच्छा करें एवं अच्छी वस्तुओंसे प्रेम करें और पारस्परिक सहयोग के साथ जीवन निर्वाह करने वाले नागरिक बनें।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन ई0एच0वी0 ;म्प्टद्ध की स्थापना द्वारा मूल्यपरक शिक्षा को बल प्रदान किया गया है। इसके अतिरिक्त एन0सी0ई0आर0टी0, नीपा, एन0आई0ओ0एस0 तथा अनेक गैर सरकारी संगठन भी मूल्यपरक शिक्षा हेतु प्रयासरत हैं। श्री सत्य सांई बाबा एजुकेशनल ट्रस्ट, जैन, विश्व भारती जैसी संस्थाएँ भी जीवन मूल्यों की शिक्षा पर कार्यक्रम चला रहें हैं। इससे स्पष्ट होता है कि मूल्यपरक शिक्षा एक व्यापक विद्या है जिसे शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर रखा जा सकता है। परन्तु, यदि हम हमारी वर्तमान शिक्षा पर एक दृष्टि डालें तो देखते हैं कि आज हमारी सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का अर्थ केवल अंक अर्जन करना है न कि सानार्जन, वर्तमान समाज में मूल्यों का हास हमारी शिक्षा के लिये एक गंभीर चुनौती है, जिसे स्वीकार करके शिक्षा को ही मूल्यों का विकास करना होगा और शिक्षा में सुधार द्वारा ही इन मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

मूल्य शिक्षा शिक्षार्थी के चरित्र एवं व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। यह बालकों में एक उपयुक्त समय पर मूल्यों का विकास करती है साथ ही उसमें विद्यमान जन्मजात आत्म–केन्द्रीयता को निःस्वार्थता, अपरिपक्वता को परिपक्वता और बाल्यावस्था को युवावस्था में परिवर्तित कर उन्हें एक मूक श्रोता से एक शक्तिशाली वक्ता में परिवर्तित करती है। भारतीय संविधान के अन्तर्गत भी चार सार्वभौमिक मूल्यों का वर्णन किया गया है जो मूल्य शिक्षा को महत्व प्रदानकरते हैं।

1. स्वतंत्र–विचारों, विश्वासों, आदर्शों, भावनाओं को व्यक्त करने की स्वतंत्रता।
2. अवसरों की समानता।
3. बन्धुत्व–व्यक्ति का सम्मान बनाये रखते हुए सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता बनाये रखना।
4. न्याय–सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक किसी भी स्तर पर किसी भी वर्ग के साथ अन्याय ना होनेदेना एवं एक व्यक्ति की स्वतंत्रता को दूसरे के मार्ग में बाधक न बनने देना।

विद्यालयों में दृष्टिगत नैतिक दुष्प्रभाव मुख्य रूप से दो रूपों में दिखलाई पड़ता है।

- **विद्यालय प्रशासन एवं प्रशासनिक व्यवस्था परः–** प्रशासनिक व्यवस्था के अन्तर्गत यद्यपि विद्यालयों में नियुक्त प्रधानाचार्य शिक्षको को एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के अपने अपने कार्य हैं जिसके लिए उन्हें वेतन मिलता है परन्तु बहुधा ऐसा देखा जा सकता है प्रधानाचार्य शिक्षक एवं शिक्षणेत्त्र कर्मचारी अपने अपने कार्य एवं दायित्वों से विमुख हैं। ऐसी स्थिति में विद्यालय में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
- **विद्यार्थियों परः–**वर्तमान में छात्रों में अनुशासनहीनता की पराकाष्ठा है। छात्रों द्वारा प्रायः बिना किसी औचित्य के प्रदर्शन, तोड़ फोड़, अराजकता , हिंसात्मक कार्य, कक्षाओं एवं परीक्षाओं का बहिष्कार आदि किया जाता है और कभी–कभी छात्र अपने शिक्षकों के प्रति असम्मान जनक भाषा का भी प्रयोग करते हैं। इस सम्बन्ध में शिक्षा आयोग ने भी लिखा हैः– ''इस स्थिति का उत्तरदायित्व किसी एक पक्ष पर नहीं है। इसका दायित्व केवल छात्रों पर अभिभावकों, शिक्षकों, राज्य सरकरों या राजनैतिक दलों है व सब पक्षों पर है।

यदि वस्तुस्थिति पर यथार्त चिन्तन करें तो पाएंगे कि समाज में हो रहे नैतिक मूल्यों में ..... ही इस का मुख्य उत्तरदायीकरण है। अतः मूल्यपरक शिक्षा की नितान्त आवश्यक है।

मूल्यपरक शिक्षा का क्रियान्वयन

यह सर्वविदित है कि शिक्षा व शैक्षिक संस्थाओं को समाज की आवश्यकता केन्द्रित धुरी पर रहना पड़ता है, अतः शिक्षा संस्थाओं के पाठ्यक्रम में भी मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा का होना वर्तमान समाज की प्रबल आवश्यकता है, ताकि समाज व राष्ट्र को मूल्य संकट का सामना करने के लिये श्रेष्ठ दिशा निर्देश मिल सकें तथा श्रेष्ठ योजनाएँ व अनुसंधानात्मक निष्कर्शों की प्राप्ति हो सके।

छात्रो में मूल्य शिक्षा के विकास तथा उनमें जीवन मूल्यों के विकास हेतु शिक्षक एक सशक्त माध्यम है, इसके लिये छात्रों हेतु विद्यालय में विभिन्न स्तर पर निम्नलिखित कार्यक्रम क्रियान्वित किये जाने चाहिये –

1. छात्रों को सुबह की प्रार्थना सभा का महत्व समझाते हुए उसमें प्रत्येक छात्र की उपस्थिति की अनिवार्यता को कड़ाई से लागू किया जाना चाहिये।
2. प्रार्थना सभा में विभिन्न गीतों, महापुरूषों के विचारों तथा भाषणों के माध्यम से छात्रों में मूल्य वृद्धि करना।
3. विद्यालय पाठ्यक्रम में कम से कम एक कालांश में नैतिकता व मूल्यपरक शिक्षा सम्बन्धी क्रियाकलाप कराये जायें जिससे छात्रों को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ प्रयोगात्मक ज्ञान भी प्रदान किया जा सके।
4. मूल्यपरक शिक्षा हेतु, विभिन्न क्रिया कलापों के लिये दृश्य–श्रव्य सामग्री का प्रयोग किया जाना चाहिये, इसके अतिरिक्त पोस्टर प्रतियोगिता, प्रदर्शनी, नाटक तथा लघु फिल्मों द्वारा भी छात्रों को प्रेरित किया जा सकता है।
5. पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के माध्यम से विद्यालय में समय–समय पर अर्न्तविद्यालयी प्रतियोगिताऐं सम्पन्न करायी जानी चाहिये जिससे छात्रों को ज्ञानार्जन के साथ–साथ विभिन्न विद्यालय के छात्रों के साथ विचार विमर्श का भी अवसर प्राप्त हो सके।
6. समय–समय पर विद्यालयों में विभिन्न संस्थाओं व संगठनों से जुड़े वक्ताओं को आमंत्रित कर उनके विचारों से छात्रों को अवगत कराना चाहिये। ये सभी वक्ता समाज के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े होने चाहिये।
7. छात्रों में सर्वधर्म समभाव की भावना का विकास करने हेतु सर्वधर्म प्रार्थना सभाओं का आयोजन विभिन्न धार्मिक समारोहों के अवसर पर कराया जाना चाहिये जिससे छात्रों को विभिन्न धर्मों के गूढ़ रहस्य को जानने का अवसर मिल सके।
8. यद्यपि हमारे शैक्षिक पाठ्यक्रमों में भाषा, इतिहास, नागरिक शास्त्र आदि अनेक विषयों में मूल्य शिक्षा को समाहित किया गया है, हिन्दी भाषा में कहानी, कविता, उपन्यास के माध्यम से नैतिक मूल्यों की जानकारी दी जाती है। पाठ्यक्रम में इसी प्रकार के विषयों व सम्पूर्ण संसार के धर्म, दर्शन व इ ितहास के द्वारा छात्रों का चारित्रिक व मानसिक विकास किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में डा0 राधाकृष्णन का वक्तव्य है– ''होमर का राजनीतिक जगत अब भर चुका है, परन्तु होमर का गीत आज भी जीवित है। दस्ते का गीत व कालिदास की कविताएं आज भी पसंद की जाती है'' रहीम व कबीर के दोहे आज भी छात्रों के सम्मुख जीवन के प्रत्येक मूल्य को उजागर करते हैं''।
9. छात्रों की मूल्यांकन प्रणाली में चारित्रिक गुण व व्यवहार परिवर्तन को भी मूल्यांकन का आधार बनाया जाना चाहिये, क्योंकि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल सैद्धांतिक बन कर रह गयी है।
10. श्रम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करने के लिये विभिन्न सामाजिक कार्यों को विद्यालय के अन्दर व बाहर आयोजन किया जाना चाहिये परन्तु इसके लिए शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। उपरोक्त सभी कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा को मूल्यपरक बनाया जा सकता है। इसके लिये सबसे आवश्यक शिक्षक की भागेदारी है। शिक्षक को अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत कर छात्रों के नैतिक व जीवन मूल्यों का प्रचार करना चाहिये। शिक्षक अपने छात्रों में सम्यक व सुन्दर विचारों का संवर्धन कर सकते हैं, क्योंकि विचारों से भावनाओं की उत्पत्ति होती हैं और भावनाऐं ही हमें कार्य करने को प्रेरित करती हैं।

11. समय के मूल्य को पहचानने के लिये शिक्षक को स्वयं एक आदर्श प्रस्तुत करना होगा। जिसके लिये वह नियत समय पर कक्षा में जायें तथा विद्यालय के समस्त शैक्षिक एक अन्य क्रिया कलाप भी सुनिश्चित समय पर ही कराये जायें।
12. वर्तमान पीढ़ी में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता को कम करने के लिये शिक्षक छात्रों में स्वनुशासन को बढ़ाये, शिक्षकों के स्वनुशासन का अनुपालन छात्र स्वयं करेंगे।

मूल्यपरक शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

माता–पिता के पश्चात गुरु का स्थान सर्वोपरि माना गया है। गुरु को उस कुम्हार के समान संज्ञा दी गयी है जो मिट्टी रूपी विद्यार्थी को एक बर्तन के समान कार देकर योग्य व उपयोगी पात्र बनाता है। गुरु किसी भी छात्र को शिक्षा दे कर उक बेहतर मनुष्य बना देता है। एक शिक्षक ही अपने विद्यार्थियों का समाज के प्रति उसके उत्तरदायित्वों से साक्षात्कार कराता है। एक शिक्षक का सबसे मुख्य कार्य है कि विद्यार्थी को वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रख कर शिक्षा देना है। वो विद्यार्थी को केवल किताबी ज्ञान तक ही सीमित न रखते हुए उसे जीवन के व्यवहारिक पक्ष का भी ज्ञान कराये। नैतिक मूल्यों की जो शिक्षा वो विद्यार्थियों को देगा उसका प्रभाव विद्यार्थी पर जीवन पर्यन्त बना रहेगा। यहीं से उसके चरित्र निर्माण की प्रक्रिया आरम्भ होगी। अतः नैतिक मूल्य के उत्थान में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शैक्षिक प्रक्रिया में अभिभावक अप्रत्यक्ष रूप से तथा शिक्षक प्रत्यक्ष रूप से अपनी भूमिकाओं का निर्वहन करते हैं। अतः शैक्षिक प्रक्रिया के उन्नयन के लिए शिक्षक मुख्य रूप से उत्तरदायी है।

प्राचीन काल से ही आचारवान शिक्षको ने ही शास्त्रों की रचना द्वारा इस शिक्षा का अविर्भाव किया है। परन्तु आज के अध्यापक 'सांई इतना दीजिये जा में कुटुम्ब समाय' की भावना को भूल कर केवल अपने उत्तरदायित्व की भावनाओं को खो रहे हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक अपने स्वार्थी से ऊपर उठ कर मूल्यों की स्थापना में अपना योगदान दें। इसके लिये मुख्यतः निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक होगा –

- शिक्षक मूल्यों के प्रति अपने आत्मविश्वास की सुदृढ़ता बनाए।
- कक्षा में लोकतांत्रिक वातावरण स्थापित किया जाये।
- शिक्षक स्वयं अपने आचरण में नैतिक मूल्यों को ग्रहण करे।
- शिक्षक विद्यार्थियों का अशुभ, अवांछनीय, असामाजिक एवं उद्देश्य रहित दिशा में कदम बढ़ाने से रोक सकते हैं।
- शिक्षक विद्यार्थियों की सुसंस्कारित व जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए एक उपयुक्त वातावरण तो प्रदान कर
- शिक्षक के प्रत्येक कार्य में चाहे वह सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक कोई भी क्यों न हो, छात्रों को उसमें राश्ट्रीय व नैतिक मूल्यों के संस्कार प्रतिबिम्बित होने चाहिए इसस` छात्रों में अच्छे चरित्र का निर्माण व अच्छ संस्कारों का सृजन होगा तथा नई पीढ़ी में परोपकार, और कर्तव्यपरायणता आदि भाश्वत मानवीय मूल्यों का समुचित विकास होगा।

निष्कर्श रूप में यह कहा जा सकता है कि छात्रों में अनुकरण की प्रवृत्ति होती है। छात्र सदैव अपने शिक्षकों व अभिभावकों का अभिकरण करते हैं। अतः शिक्षकों को मूल्यपरक शिक्षा के विकास में स्वयं को एक आदर्श रूप में प्रस्तुत करना होगा। जिससे व्यक्ति, समाज, देश तथा अंततः सम्पूर्ण विश्व की उन्नति हो।उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि मूल्य निर्माण प्रक्रिया में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। शिक्षक के साथ परिवार भी स्वयं को आदर्श रूप में स्थापित करें, जिससे छात्र नैतिक मूल्यों को वास्तव में अपने आचरण में समाहित कर सकें| शिक्षक को छात्रों का आदर्श बनने की आवश्यकता है जिसके सम्पर्क में आने से लोहा भी कुन्दन बन जाता है। विद्यालयों से निकलने वाले छात्र राष्ट्र के कुशल एवं जिम्मेदार नागरिक बनसकें और भारत वर्ष को पुनः उसकी खोई प्रतिष्ठा अर्जित करा सकें, यही 'मूल्यपरक शिक्षा' का उद्देश्य है।

सन्दर्भित ग्रन्थ सूची

- आयुष्मान गोस्वामी, अप्रैल–2008 'हिन्दी भाषा व मूल्य शिक्षा', भारतीय आधुनिक शिक्षा, पृष्ठ 87–91 अंक–4।

- अजीत कुमार राय व मनोज कुमार राय: मूल्य एवं मूल्यपरक शिक्षा : प्राथमिक शिक्षा एवं शिक्षक के संदर्भ में अधिगम पृष्ठ –16
- धर्मपाल जैन, जुलाई 2004, 'मूल्य आधारित नैतिक शिक्षा', भारतीय आधुनिक शिक्षा, पृष्ठ 20–23, अंक–1।
- नीति, जनवरी 2005, वर्तमान शिक्षा में नैतिक मूल्यों का हास, भारतीय आधुनिक शिक्षा, पृष्ठ 10–13, अंक–3।
- निधि सिघल, डॉ. जुबराज खमारी रू: बी.एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन प्दजमतदंजपवदंस श्रवनतदंस वि ।चचसपमक त्मेमंतबी 2017.3(10): 232-236
- पी0डी0 पाठक, 'भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- लोढ़ा, महावीरमल (2013), नैतिक शिक्षाः विविध आयाम, हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- संतोष मित्तल, जनवरी 2004, 'आधुनिक शिक्षा व्यवस्था – अपेक्षित परिवर्तन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, पृष्ठ 45–48, अंक–3।
- सुरेश भटनागर, 1991–92 आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, मेरठ पब्लिकेशन्स हाउस, मेरठ–4, सप्तम संस्करण।

web page:

https://leverageedu.com/blog/hi/importance-of-value-education

Corresponding Author

* डा0 (श्रीमती) विनीता चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर
डी0 डब्लू0 टी0 कालेज, देहरादून
Email: drvineeta173@gmail.com, Mob.-8433277476